बीजेपी का सबकुछ लगा था इस बिल पर

नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में विपक्षी दलों के भारी विरोध को देखते हुए भूमि सुधार पर अध्यादेश वापस लिया था। तब एक सवाल यह भी उठा था कि इससे आर्थिक सुधारों की प्रगति पर बुरा असर पड़ेगा।

नवीन वर्मा।।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान किया है। साल भर से चले आ रहे तनाव को खत्म करने के लिहाज से इस कदम का स्वागत किया जा सकता है। सरकार 29 नवंबर से शुरू होने जा रहे शीतकालीन सत्र में अब इन कानूनों को वापस लेने के लिए विधेयक लाएगी। कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग को लेकर आंदोलन कर रही संस्था संयुक्त किसान मोर्चा ने प्रधानमंत्री की घोषणा का स्वागत करते हुए कहा कि उनका आंदोलन सिर्फ तीन काले कृषि कानूनों के खिलाफ नहीं था।

किसान सभी कृषि उत्पादों के लिए आकर्षक कीमतों की गारंटी चाहते हैं। उसने सरकार से इलेक्ट्रिसिटी अमेंडमेंट बिल भी वापस लेने की मांग की है। वैसे, प्रधानमंत्री के ऐलान से पहले इस साल 12 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट ने अगले आदेश तक तीनों कृषि कानूनों के अमल पर रोक लगा दी थी। उसने एक एक्सपर्ट कमिटी भी बनाई थी, जिसे इन कानूनों पर किसानों और सरकार की राय लेनी थी। इस कमिटी ने 19 मार्च को अदालत को सीलबंद लिफाफे में अपनी रिपोर्ट सौंप दी थी, लेकिन अदालत की ओर से आगे कोई कार्यवाही नहीं हुई। दूसरी तरफ, सरकार ने भी इन कानूनों पर लगी अस्थायी रोक को हटवाने की कोशिश नहीं की।

बीजेपी का इन कानूनों को लेकर राजनीतिक रूप से भी बहुत कुछ दांव पर लगा था। उसकी अगुआई वाली सरकार साल भर तक इन कानूनों को किसानों के हित में बताती रही। इसके लिए अलग–अलग तर्क देती रही। इसलिए अब इन्हें वापस लिए जाने के बाद आलोचकों को यह कहने का मौका मिला है कि उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और गोवा में होने जा रहे चुनावों को देखते हुए उसने यह फैसला किया है। किसान आंदोलन में विशेष रूप से पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के किसानों की बड़ी भागीदारी रही है। नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में विपक्षी दलों के भारी विरोध को देखते हुए भूमि सुधार पर अध्यादेश वापस लिया था। तब एक सवाल यह भी उठा था कि इससे आर्थिक सुधारों की प्रगति पर बुरा असर पड़ेगा।

यह सवाल इस बार भी उठ रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि कृषि क्षेत्र में सुधार जरूरी हैं। इसीलिए सरकार कृषि कानून लेकर आई थी। अब इन्हें वापस लेने से यह संदेश जा सकता है कि केंद्र ने आर्थिक बदलाव का रास्ता छोड़ दिया है। वह भी पिछली सरकारों की तरह राजनीतिक दबाव के आगे घुटने टेकने लगी है। यह संदेश देश की इकॉनमी के लिए बुरा होगा। इसलिए सरकार को इस धारणा को खत्म करना चाहिए। इसके लिए उसे दूसरे मोर्चों पर सुधार की गाड़ी आगे बढ़ानी होगी। कृषि कानूनों का अनुभव यह भी बताता है कि विभिन्न पक्षों से संवाद और सहमति हासिल करना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। यहां सरकार से चूक हुई। इस सबक को अमल में लाया जाए तो बहुत मुमकिन है कि आगे चलकर बेहतर तरीके से बदलाव लाए जा सकेंगे।

शक्ति की स्तुति

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

देवी भागवत में प्रसंग है कि किसी समय इंद्र और प्रहलाद का भयंकर युद्ध हुआ जो पूरे सौ वर्षों तक चला। इस युद्ध में प्रहलाद विजयी हुए, फिर इंद्र ने गुरु बृहस्पति के सलाह को मानते हुए शक्ति की स्तुति की। उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर शक्ति उपस्थित हुई और देवताओं से कहा कि वे भय का त्याग कर दें क्योंकि वे उनके संकट का हरण कर देंगी। ऐसा कह कर सिंह पर सवार होकर देवी वहां चल पड़ी जहां पर दैत्य थे। देवी को आया देख कर सभी दानव भयभीत हो गए और आपस में विचार करने लगे, "अगर वे अपने प्राणों की सुरक्षा चाहते हैं तो अभी इस समय उनके लिए यहां से चले जाना ही बेहतर था।" दानव यह सोचकर डर गए थे कि देवी ने पूर्व काल में महिषासुर का वध, चंड मुंड का विनाश, मधु कैटभ का संहार किया था और आज भी वे उन्हें नष्ट कर देंगी।

संपादकीय

खनिजों का अखंड भंडार

भारत को मध्य एशिया के प्रति वह रवैया नहीं रखना है, जो ब्रिटिश राज का था। भारत का उद्देश्य है कि संपूर्ण मध्य एशियाई राष्ट्रों का विकास हो और उसका लाभ दक्षिण एशिया के देशों को भी मिले। मध्य एशिया के इन राष्ट्रों में गैस, तेल, तांबा, लोहा, कोयला, यूरेनियम के भंडार अछूते पड़े हुए हैं। मध्य एशिया का क्षेत्र भारत से सवा गुना बड़ा है और उसकी जनसंख्या 8 करोड़ भी नहीं है। आप पांच–पांच सौ किलोमीटर चले जाइए, आपको एक भी आदमी दिखाई नहीं पड़ेगा। यदि इन देशों में भारत अपने विशेषज्ञों को लगाए और निवेश करे तो यहां के लोगों को बड़े पैमाने पर रोजगार मिल सकता है। साथ ही, सारा दक्षिण और मध्य एशिया अगले दस वर्षों में यूरोप से भी अधिक समृद्ध हो सकता है। भारत और मध्य एशिया के सांस्कृतिक संबंध भी सदियों से काफी मजबूत रहे हैं। अंग्रेज तो यही प्रचार करते रहे कि मध्य एशिया के आर्यों ने ही वहां से आकर भारत को बसाया है। इन देशों में मुझे पिछले 50–55 वर्षों में कई बार जाने का मौका मिला। इन देशों में आर्य, जैन और बौद्ध संस्कृतियों के अवशेष देखकर कोई भी चमत्कृत हो सकता है। इनकी भाषा और विश्व–दृष्टि पर संस्कृत का प्रभाव देखने लायक है। भारत चाहे तो इन राष्ट्रों के साथ दोस्ती करके अपने प्राचीन वैभव को फिर से प्राप्त कर सकता है।

रूस का था कब्जा

पिछले सप्ताह मध्य एशिया के पांचों राष्ट्रों– कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान और किर्गिस्तान के विदेश मंत्री एक साथ दिल्ली आए और उन्होंने भारत सरकार के साथ संवाद किया।

वेदप्रताप वैदिक।।

मध्य एशिया के पांचों गणतंत्रों और भारत के रिश्ते अब मजबूत हो रहे हैं। इसका जबरदस्त असर भारत की विदेश नीति और इस क्षेत्र के सभी देशों की समृद्धि पर होगा। पिछले सप्ताह मध्य एशिया के पांचों राष्ट्रों– कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान और किर्गिस्तान के विदेश मंत्री एक साथ दिल्ली आए और उन्होंने भारत सरकार के साथ संवाद किया। पिछले महीने ही इन देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार भी दिल्ली आए थे। इन देशों के साथ पहले भी दो बार भारत का संवाद हो चुका है।

2015 में यह भी पहली बार हुआ था कि भारत से कोई प्रधानमंत्री इन पांचों देशों में एक साथ गए हों। लेकिन इन देशों के साथ भारत के संबंध जितने मजबूत होने चाहिए थे, उतने नहीं हुए। उसकी वजह यह है कि लगभग 30 साल पहले तक ये राष्ट्र रूस के कब्जे में थे। तब इनके साथ रिश्ते मॉस्को से संचालित होते थे। इनके बारे में यह धारणा भी बनी रही कि ये कहीं दूर बसे हुए देश हैं। इनकी गिनती भारत के पड़ोसियों में नहीं होती थी, लेकिन इतिहास बताता है कि ये देश और भारत सदियों से एक–दूसरे के पड़ोसी रहे हैं और पड़ोसी से भी ज्यादा एक बड़े परिवार की तरह रहे हैं।

ये पांचों देश यूं तो मुस्लिम–बहुल हैं, लेकिन कट्टरपंथी नहीं हैं। इन पर सोवियत संघ का साम्यवादी प्रभाव काफी गहरा है। इसलिए भारत के प्रति इन राष्ट्रों में एक आकर्षण है। इसी का प्रमाण है, पिछले सप्ताह पाकिस्तान में आयोजित इस्लामी सहयोग संगठन (ओआईसी) का सम्मेलन! 57 इस्लामी देशों के इस संगठन के सम्मेलन में कई मुस्लिम देशों के विदेश मंत्री गए, लेकिन इन पांचों मध्य एशियाई देशों के विदेश मंत्री इस्लामाबाद जाने की बजाय नई दिल्ली आए। उस सम्मेलन में अफगानिस्तान के बारे में विचार–विमर्श हुआ।

भारत ने अफगान–संकट पर पिछले महीने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों का जो सम्मेलन किया, उसमें उसने पाकिस्तान और चीन को भी बुलाया था, लेकिन दोनों ने भारतीय पहल का बहिष्कार किया। वैसे, हैरानी की बात यह है कि पाकिस्तान ने अपने सम्मेलन में भारत को आमंत्रित नहीं किया, जबकि मुस्लिम आबादी के लिहाज से भारत दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्रों में माना जाता है। अगर भारत को आमंत्रित नहीं किया गया तो अमेरिका, यूरोपीय संघ, रूस और चीन जैसे देशों को क्यों बुलाया गया? भारत ने अफगानिस्तान में जितने बड़े और विविध निर्माण–कार्य किए हैं, कितने देशों ने किए हैं?

भारत और पाकिस्तान में आयोजित इन दोनों सम्मेलनों में सबसे बड़ा मुद्दा तो अफगानिस्तान ही था। भारत ने पिछले दो दशकों में अफगानिस्तान के 34 प्रांतों में लगभग 3 बिलियन डॉलर खर्च करके संसद से सड़क तक क्या–क्या नहीं बनाया है। उसने लगभग 200 किलोमीटर की सड़क जरंज से दिलाराम तक बनाकर अफगानिस्तान के लिए फारस की खाड़ी तक पहुंचने का सीधा रास्ता बना दिया है। समुद्र तक पहुंचने के पाकिस्तान पर उसकी निर्भरता का यह विकल्प है। अगर अब तक चाहबहार–परियोजना कारगर हो जाती तो भारत और मध्य एशिया के बीच सीधा रास्ता बन जाता, जिसका लाभ अफगानिस्तान को तो मिलता ही। मध्य एशिया का यह पूरा क्षेत्र लगभग 100 साल तक ब्रिटिश साम्राज्य और रूस के बीच महाशक्ति–अखाड़ा बना रहा है।

सूडोकु नवताल-5407

मध्यम

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5406 का हल

6	5	3	9	1	7	2	8	4
9	1	8	2	6	4	3	7	5
7	4	2	5	3	8	1	9	6
3	7	1	8	9	2	4	5	8
8	6	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	8	1	6	3	7
4	3	8	7	5	9	8	1	2
1	8	7	3	2	6	5	4	9

अपना ब्लॉग

सवाल पर पांचों देशों ने वही राय रखी

मोहन। अफगानिस्तान के सवाल पर पांचों देशों ने वही राय रखी, जो संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने प्रस्ताव में रखी है। यानी काबुल की सरकार सर्वसमावेशी हो। वह आतंकी गतिविधियों और अफीम की तस्करी से मुक्त रहे और अफगान जनता की जरूरतों को पूरा किया जाए। भारत ने 50 हजार टन अनाज और लगभग डेढ़ हजार टन दवाएं भी काबुल भिजवा दी हैं। इस्लामी देशों ने निजी तौर पर थोड़ी–बहुत मदद की घोषणा जरूर की है, लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि 57 देशों के प्रतिनिधियों ने अफगान जनता की जीवन–रक्षा के लिए कोई बड़ा कदम नहीं उठाया। अगर विदेशी बैंकों में रोके गए 10 बिलियन डॉलर ही अफगान जनता की सेवा में लगा दिए जाएं तो उसे मौजूदा संकट से राहत मिल सकती है। वहीं, दिल्ली में हुए इस सम्मेलन में सभी देश इस बात पर सहमत थे कि यदि दक्षिण एशिया और मध्य एशिया के बीच व्यापार, उद्योग–धंधे और आवागमन को बढ़ाना है तो 'उत्तर–दक्षिण यातायात गलियारे' की योजना को जल्दी से जल्दी साकार करना होगा।